दिल्ली सल्तनत

(1206 - 1526 AD)

विदेशी आक्रमण:

- पहला मुस्लिम आक्रमणकारी - मोहम्मद बिन कासिम (712 AD)
  - राजा दाहिर की हत्या
  - अरब से आया था
- सिंध भाग पर

- प्रथम तुर्की आक्रमण: महमूद गजनवी का आक्रमण (998 - 1030 AD)
  - देश - तुर्कमेनिस्तान
  - मृत्यु - 1030 AD (मलेरिया)
  - 17 बार आक्रमण किया
  - कारण - बदला और लूट
    - अपने पिता (सुबुक्तगीन) की मृत्यु का

गजनवी साम्राज्य

- इससे पहले शासन किया - जयपाल ने
  - गजनवी के खिलाफ पेशावर की लड़ाई (1001 ई०)

- गजनवी का सोमनाथ पर आक्रमण:
  - 16 वीं बार → मंदिर (1025 AD)
  - 17 वीं बार → अंतिम आक्रमण (1027 AD)

वैहिंद का युद्ध: गजनवी और हिंदू शाही शासकों के बीच संघर्षों की एक श्रृंखला

1013 ईस्वी में महमूद गज़नी और आनंदपात के बीच लड़ी गई थी. यह लड़ाई पेशावर के
पास हुई थी. इस युद्ध में महमूद गज़नी ने आनंदपात को हराया था.
आनंदपात, हिन्दूशाही वंश के राजा थे और उनका
शासन 1001 ईस्वी से 1010
ईस्वी तक रहा था. आनंदपात के राज्य का ज़्यादातर
हिस्सा सुबुक्तगीन और उसके
बेटे महमूद ने जीत लिया था. इस युद्ध में आनंदपात का साथ सांभर के
चौहान राजपूतों ने दिया था

PARMAR SSC

PARMAR SSC

गजनवी के समय के लेखक :

- फिरदौसी —(लिखा)→ शाहनामा
- अल-बरूनी → तहकीक मा ली-ए-हिन्द (अन्य नाम - किताब-अल-हिन्द)

→ दूसरा तुर्की आक्रमण : मोहम्मद गौरी का आक्रमण (1175 - 1206 AD)

↳ (अन्यनाम) → मुइज़ुद्दीन मोहम्मद / मुहम्मद

पहला आक्रमण - मुल्तान पर, 1175 ई०

1178 → गुजरात पर

↳ भीम II से हारा (पत्नि - नायकादेवी)

→ संयोगिता का विवाह पृथ्वीराज चौहान से हुआ।

- **बिजोलिया अभिलेख** → सांभर व अजमेर के चौहान वंश की जानकारी मिलती है।

पखाल
↓
जयचंद
↓
पुत्री- संयोगिता

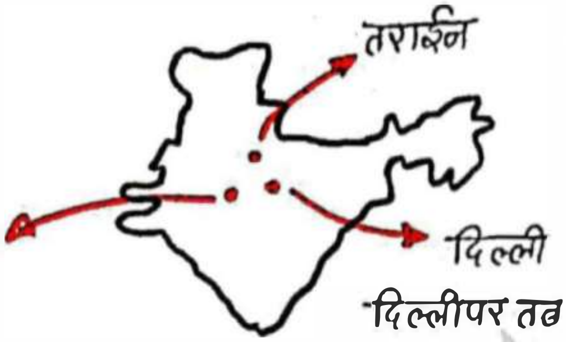

दिल्लीपर तब पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वी राज चौहान) का शासन था

पृथ्वीराज & गौरी के मध्य युद्ध:

- तराईन का प्रथम युद्ध → 1191 AD → पृथ्वीराज विजयी
- तराइन का दूसरा युद्ध → 1192 AD → गौरी विजयी

पृथ्वीराज राज चौहान के दरबारी लेखक:

चंदबरदाई - पृथ्वीराज रासो

↳ इसके अनुसार गौरी ने 17 बार आक्रमण किया।

→ गौरी ने पुनः भारत पर आक्रमण किया।

- चंदावर का युद्ध (1194 ई०) → गौरी Vs जयचंद
  ↳ विजयी

- गुलाम वंश → 1206 - 90 AD
- खिलजी वंश → 1290 - 1320 AD
- तुगलक वंश → 1320 - 1414 AD
- सैय्यद वंश → 1414 - 1451 AD
- लोधी वंश → 1451 - 1526 AD

→ कुतुबुद्दीन ऐबक (गौरी का कमांडर), तराइन मे गौरी की मदद की

→ गौरी के अन्य गुलाम:

यल्दौज, कुबाचा, बख्तियार खिलजी

↳ नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वंस किया।

PARMAR SSC

गुलामवंश (1206 - 1290 AD) :

इसे मामलुक राजवंश के नाम से भी जाना जाता, शासक → इल्बारी जनजाति से संबंधित

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 AD):

- इन्होंने लाहौर (राजधानी) पर शासन किया।
- उपाधि - लाख बख्श (लाखों का दाता)
- 1210 ई० में चौगान या पोलो खेलते समय मृत्यु
- 2 (दो) मस्जिदों का निर्माण करवाया -
  - कुवत-उल-इस्लाम (दिल्ली) → 12वीं सदी में निर्मित
  - अढाई दिन का झोपड़ा (अजमेर) → पहले यह जैन मठ था
- ऐबक ने प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन भक्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण भी शुरू किया।
- उन्होंने हसन-उन-नजामी (ताज-उल-मासिर के लेखक) और फखरुद्दीन जैसे लेखकों को संरक्षण दिया।
- कुतुबमीनार : 5 मंजिला, 73 m ऊँची

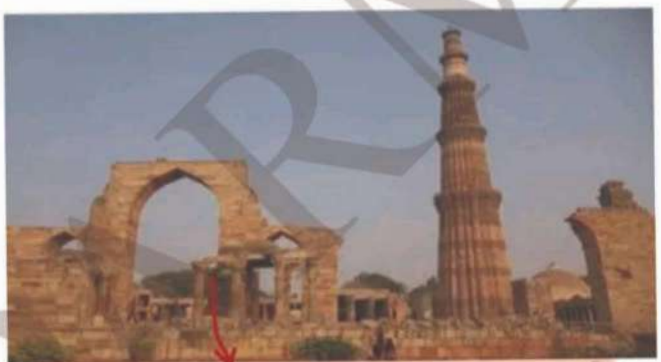

Quwat-ul-Islam next to Qutub Minar

Built in: 12th Century

Made of Corbeled Technique

PARMAR SSC

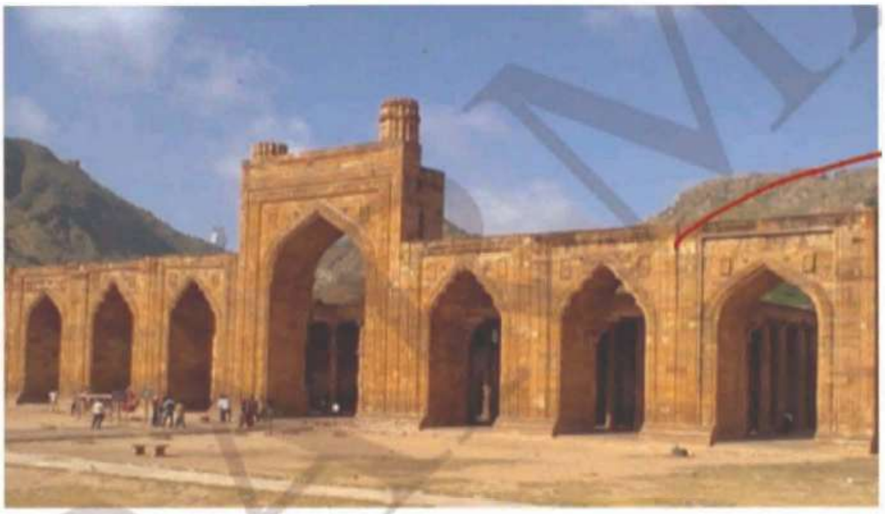

Adhai din ka Jhopra at Ajmer

कुतुब मीनार का निर्माण:

- कुतुबुद्दीन ऐबक → पहली मंजिल का निर्माण।
- इल्तुतमिश → तीन और मंजिलो को जोड़ा।
- फिरोजशाह तुगलक → 5 वीं मंजिल।

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-1236AD):

- → कुतुबुद्दीन का दामाद, आरामशाह की हत्या की।
- → उसने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाया।
- → उसने दिल्ली सल्तनत को चंगेज खान के क्रोध से बचाया।
  - ↳ मृत्यु- 1227AD
- → निजाम उल मुल्क उनके वजीर (प्रधानमंत्री) थे।
- → उन्होंने चांदी का सिक्का (टंका) और तांबे का सिक्का (जीतल) चलाया।
- → इक्ता प्रणाली की शुरुवात की
  - ↳ भूमि का टुकड़ा

- → उन्होंने दासों का आधिकारिक कुलीन वर्ग स्थापित किया जिसे चहलगानी चालीसा (40 का समूह) के नाम से जाना जाता है।

चंगेज खान → 1219 ई० में ट्रांसऑक्सियाना पर हमला।

PARMAR SSC

रजिया सुल्तान (1236-1240 AD):

- इल्तुतमिश की पुत्री
- भारत पर शासन करने वाली प्रथम महिला और एकमात्र मुस्लिम महिला।
- भटिंडा के गवर्नर अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया, रजिया ने याकूत के साथ मिलकर अल्तुनिया के खिलाफ चढ़ाई की।
- अल्तुनिया ने याकूत की हत्या करवाकर रजिया को कैद करवा लिया।
- बाद में अल्तुनिया और रजिया का विवाह हो गया।
- 1240 ई० में रजिया एक षडयंत्र का शिकार हो गई और कैथल (हरियाणा) के पास उसकी हत्या कर दी गई।
  - ↳ खोखर जनजाति द्वारा
- उसने संरक्षण दिया- मिन्हाज- अल- सिराज → तबकात-ए-नासिरी (लिखा)

गियासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई०):

- यह नासीरुद्दीन महमूद के अधीन नायब था।
- उसने चहलगानी चालीसा की शक्ति को तोड़ा और ताज की प्रतिष्ठा को बहाल किया।
- उसने सैन्य विभाग 'दीवान-ए-अर्ज' की स्थापना की।
- उपाधि- जिल- ए-इलाही (अल्लाह की छाया) → अफरासियाब के वंशज
- उन्होंने सिजदा (राजा के समक्ष झुकना) और पैबोस (राजा के पैर चूमना) को अभिवादन के सामान्य रूप में पेश किया।
- उसने लौह एवं रक्त की नीति शुरू की।

अंतिम शासक: कैकुबाद → गुलाम वंश का अंतिम शासक

- सुल्तान महमूद अफगानिस्तान के शहर गजनी से भारत आया था।
- चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों ने उत्तर-पूर्वी ईरान में ट्रांसऑक्सियाना पर 1213 में आक्रमण किया।

PARMAR SSC

दरबारी भाषा → फारसी

- बलबन का वास्तविक नाम → उलूग खाँ
- सुल्तान बलबन के अधीन बंगाल के गवर्नर तुगरिल बेग ने बलबन के खिलाफ विद्रोह कर दिया और 1279 में खुद को बंगाल का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।

वजीर - pm (वित्त विभाग)
आमिल - राजस्व वसूल करता था।
अमीर - परगना का राज्यपाल
नायब - वित्त को छोड़कर अन्य सभी विभागों का प्रभारी
मुक्ति / वली / इक्तेदार - वे इक्ता रखते थे।

PARMAR SSC

खिलजी वंश :

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 AD):

खिलजी वंश का संस्थापक

भतीजा ↓

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई०):

पदमावत: मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित

अलाउद्दीन का साम्राज्य :

- गुजरात (1298)
- रणथंभौर (1301) → हम्मीर देव चौहान (सबसे पहले जौहर किया गया) ↑ अमीर खुसरो द्वारा जिक्र
- मेवाड़ (1303) → राणा रतन सिंह; राजधानी- चित्तौड़
- मालवा (1305)
- जालौर (1311)

→ दक्कन में अलाउद्दीन की सेना का नेतृत्व मलिक काफूर (एक किन्नर) ने किया।

दक्कन अभियान के बाद 'सिकंदर ए-सानी' की उपाधी ली।

द्वितीय अलेक्जेंडर / सिकंदर द्वितीय

वास्तविक नाम- अलीगुर्शप

अलाउद्दीन ने उसे गुजरात के बाजार से 1000 दीनार में खरीदा था इसलिये काफूर को हजार दीनारी कहा जाता है।

उसने हराया:
- राम चन्द्र (देवगिरि के यादव शासक)
- प्रताप रुद्रदेव (वारंगल के काकतीय शासक)
- वीर बल्लाल III (द्वारसमुद्र के होयसल शासक)
- वीर पांड्या (मदुरै के पांड्या शासक)

प्रशासनिक सुधार:

→ प्रस्तुत किया: दाग (घोड़े पर दाग लगाना) ↓ छप्पा और चेहरा (सैनिकों की वर्णनात्मक सूची) ↓ हुलिआ

→ भारी कर लगायें गये: सभी भूमि को मापने का आदेश दिया गया और फिर राज्य का हिस्सा तय किया गया।

↓ विशेष अधिकारी द्वारा- मुस्तखराज (राजस्व एकत्र किया)

PARMAR SSC

3 कर: कृषकों द्वारा दिये जाने वाले कर का प्रकार

- जजिया → गैर मुसलमानों पर कर
- घरई → घर कर
- चरई → पशुओं के चरने वाले घास के मैदानों पर कर

→ जकात कर: धनी मुसलमानों पर

→ जजिया कर सबसे पहले मोहम्मद बिन कासिम द्वारा लगाया गया।

→ अलाउद्दीन ने 3 बाजार स्थापित किये → खाद्यान्न के लिये
→ मंहगे कपड़े & घोड़ों के लिये
→ दासों और मवेशियों के लिये

→ प्रत्येक बाजार का नियंत्रण- शाहना (उच्च अधिकारी द्वारा)
↓
व्यापारियों और दुकानदारों का रजिस्टर बनाये रखें & कीमतों का हिसाब रखें।

→ दो अधिकारियों द्वारा बाजार की जांच → दीवान-ए-रियासत & शन्ना-ए-मंडी

→ ब्रिकी बिक्री के लिये सभी सामान खुले बाजार में लाये जाते थे- सारा-ए-अदल

→ **निर्माण:** अलाई किला, अलाई दरवाजा (कुतुबमीनार का प्रवेश द्वार), हजार स्तम्भ का महल (हजार सुतुन), हौज खास (टैंक)

PARMAR SSC

Alai Darwaza

→ स्थापना: दिल्ली का दूसरा शहर - सीरी

↳ 7 शहरों से निर्मित- पहला: किला राय पिथौरा, तोमर राजवंश द्वारा

→ अलाउद्दीन का मकबरा - दिल्ली

→ संरक्षक- कला और शिक्षा

→ दरबारी कवि - अमीर खुसरो

- उपाधि → तूती-ए-हिन्द (भारत के तोता)
- → भारत मे कव्वाली की शुरुवात
- → खिलजी को 'सुल्तान-ए-जहाँ' की उपाधि दी।

पुस्तक { तुगलकनामा, नूह- सिपेहर

→ 1316 ई० मलिक काफूर ने अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद गद्दी पर कब्जा कर लिया।

→ मुबारक खान :(1316-1320 ई०)

→ खुसरो खान : 1320 ई०

ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई०)

↳ खिलजी वंश के अंतिम शासक खुसरो खान की हत्या गाजी मलिक (उपाधि ली- ग्यासुद्दीन तुगलक) ने की।

→ एक दुर्घटना में मृत्यु के बाद उनके बेटे. जौना (उलुग खान) ने गद्दी संभाली

↓ उपाधि ग्रहण की - मोहम्मद बिन तुगलक

उन्होंने तुगलकाबाद शहर का निर्माण किया और तुगलकाबाद किला भी बनवाया।

मोहम्मद बिन तुगलक : 1325-51 ई०

→ समकालीन यात्री - इब्न बतूता → मोरक्को से आया

↳ पुस्तक - रिहला

PARMAR SSC

→ उसके शासनकाल के दौरान लेखक- जियाउद्दीन बरनी
↓ (लिखी)
तारीख-ए-फिरोजशाही & फतवा-ए-जहांदारी

मुहम्मद बिन तुगलक ने विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया, जिनमें शामिल हैं:

अजीज खुम्मार- एक शराब निर्माता
फिरोज हज्जाम- एक नाई
मनका तब्बख- एक रसोईया
लाधा & पीरा- दो माली

- सोंधर ऋण
- तकावी ऋण

} कृषि विभाग → दिवान-ए-कोही

- जहानपना शहर का निर्माण किया।

→ इसे 'सबसे बुद्धिमान मूर्ख' के नाम से भी जाना जाता है।
→ दोआब में कराधान (1326)
→ राजधानी स्थानांतरित (1327) → दिल्ली से दौलताबाद → देवगिरी
→ सबसे बड़ा साम्राज्य था।
→ उन्होंने खुरासान अभियान (1329) का प्रस्ताव रखा।
→ कराचिल अभियान - 1330
→ टोकन मुद्रा चलाई (1329): उच्च मूल्य वाली कांस्य मुद्रा

फिरोजशाह तुगलक (1351-1388 ई०):

→ सैनिकों को नकद भुगतान नहीं किया जाता था, बल्कि उन्हें भूमि राजस्व के

PARMAR SSC

→ आधार पर भुगतान किया जाता था - वजेहा

→ उनके समय में जजिया एक अलग कर बन गया।

→ कुरान में लगाये गये 4 प्रकार के करों का उल्लेख है-

- खराज → भूमि कर, उपज का 1/10 भाग
- जकात → संपत्ति पर 2% कर
- जजिया → गैर मुसलमानों पर लगाया गया कर
- खम्स → युद्ध के दौरान प्राप्त लूट का 1/5 भाग

→ कई नहरों की मरम्मत की गई और हक-ए-शर्ब + हासिल-ए-शर्ब (जल कर) लगाया गया।

→ स्थापना: फतेहाबाद, हिसार, जौनपुर, फिरोजाबाद

↳ मोहम्मद बिन तुगलक के नाम पर- जौना

→ दिल्ली में एक अस्पताल की स्थापना - दर-उल-शिफा

→ नया विभाग : दीवान-ए-खैरात गरीब लड़कियों की शादी के लिये।

→ उनके प्रधानमंत्री- खान-ए-जहाँ मकबुल

→ इकता व्यवस्था को वंशानुगत कर दिया गया।
(इक्ता)

वह भारत के पहले सुल्तान थे जिन्होंने हिंदू धार्मिक ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद का कार्य शुरू किया।

→ तैमूर का आक्रमण : 1398

↓ मंगोल था

↳ अंतिम तुगलक शासक मुहम्मद शाह तुगलक के दौरान

सैय्यद वंश :

- खिज्र खान → 1414-21
- मुबारक शाह → 1421-34
- मुहम्मद शाह → 1434-43
- आलमशाह → 1443-1451

PARMAR SSC

→ 1398 में दिल्ली की सेना को हराने के बाद तैमूर ने खिज्र खान को मुल्तान का शासक नियुक्त किया। खिज्र खान ने सुल्तान दौलत खान को हराकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया और सैय्यद वंश की स्थापना की।

→ तारिख-ए-मुबारक शाही में याह्या बिन सरहिन्दी बताते हैं कि सैय्यद पैगंबर मुहम्मद के वंशज थे।

लोदी वंश : (1489 - 1526 AD)

संस्थापक: बहलोल लोदी (1451 - 1488 ई०)

सिकंदर लोदी (1489-1517) :

→ राजधानी: दिल्ली से आगरा स्थापित की गई।
↳ सिकंदर लोदी द्वारा स्थापना

→ खेतों की माप के लिये 32 अंको का 'गज-ए-सिकंदरी' (सिकंदर का यार्ड) शुरू किया गया।

→ वह एक कवि भी था और 'गुलरुखी' उपनाम से फारसी में कवितायें लिखी।

→ मोठ की मस्जिद बनाने का आदेश दिया।

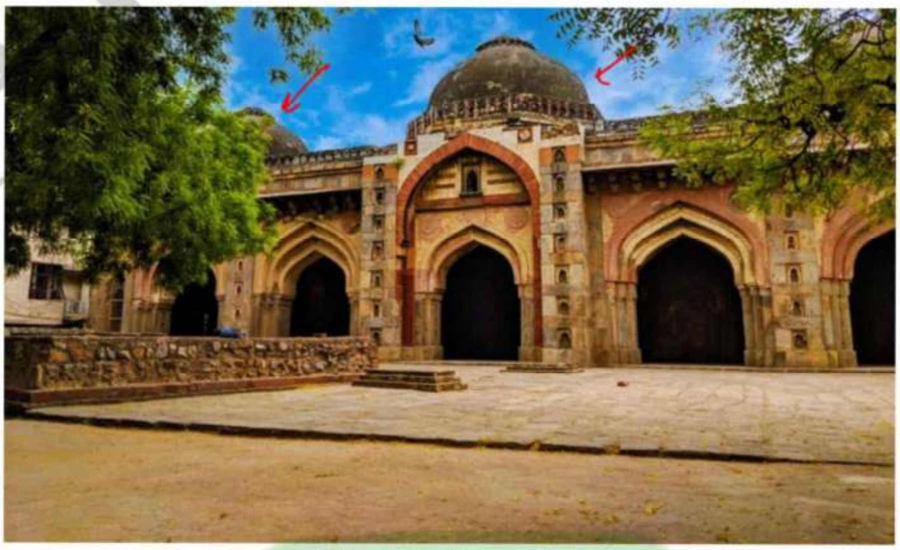

Moth Ki Masjid
(Double Dome)

PARMAR SSC

इब्राहिम लोदी (1517-1526):

- बाबर के साथ पानीपत की लड़ाई लड़ी (1526 ई०)
- दौलतखान → बाबर

केन्द्रीय प्रशासन:

- दीवान-ए-विजारत → वित्त विभाग
- दीवान-ए-अर्ज → सैन्य विभाग → बलबन
- दीवान-ए-इंशा → पत्राचार विभाग
- दीवान-ए-रिसालत → अपील विभाग
- दीवान-ए-मुस्तखराज → बकाया विभाग → अलाउद्दीन खिलजी
- दीवान-ए-रियासत → वाणिज्य विभाग
- दीवान-ए-कोही → कृषि विभाग → मोहम्मद बिन तुगलक
- दीवान-ए-बंदगान → दासों का विभाग
- दीवान-ए-खैरात → दान विभाग
- दीवान-ए-इस्तियाग → पेंशन विभाग

पुस्तकें
- तारिख-ए-मुबारकशाही → बिन अहमद सरहिन्दी → फारसी में
- तबकात-ए-नासिरी → मिन्हाज-उस-सिराज
- तहकीक-ए-हिंद → अल-बरुनी

PARMAR SSC

विजयनगर साम्राज्य

विजयनगर साम्राज्य (1336-1565 ई०):

↳ अर्थ- विजय का शहर

→ हम्पी के खंडहरों को 1810 में एक इंजीनियर और पुरातत्वविद् द्वारा प्रकाश में लाया गया था।

↳ कॉलिन मैकेंजी

→ इसे हम्पी के नाम से भी जाना जाता है यह नाम स्थानीय मातृ देवी के नाम पर पड़ा।

↳ पम्पादेवी → पम्पाहम्पी

हम्पी → विजयनगर की राजधानी

हम्पी → तुंगभद्रा नदी के किनारे

↳ 1986, UNESCO विश्व विरासत स्थल

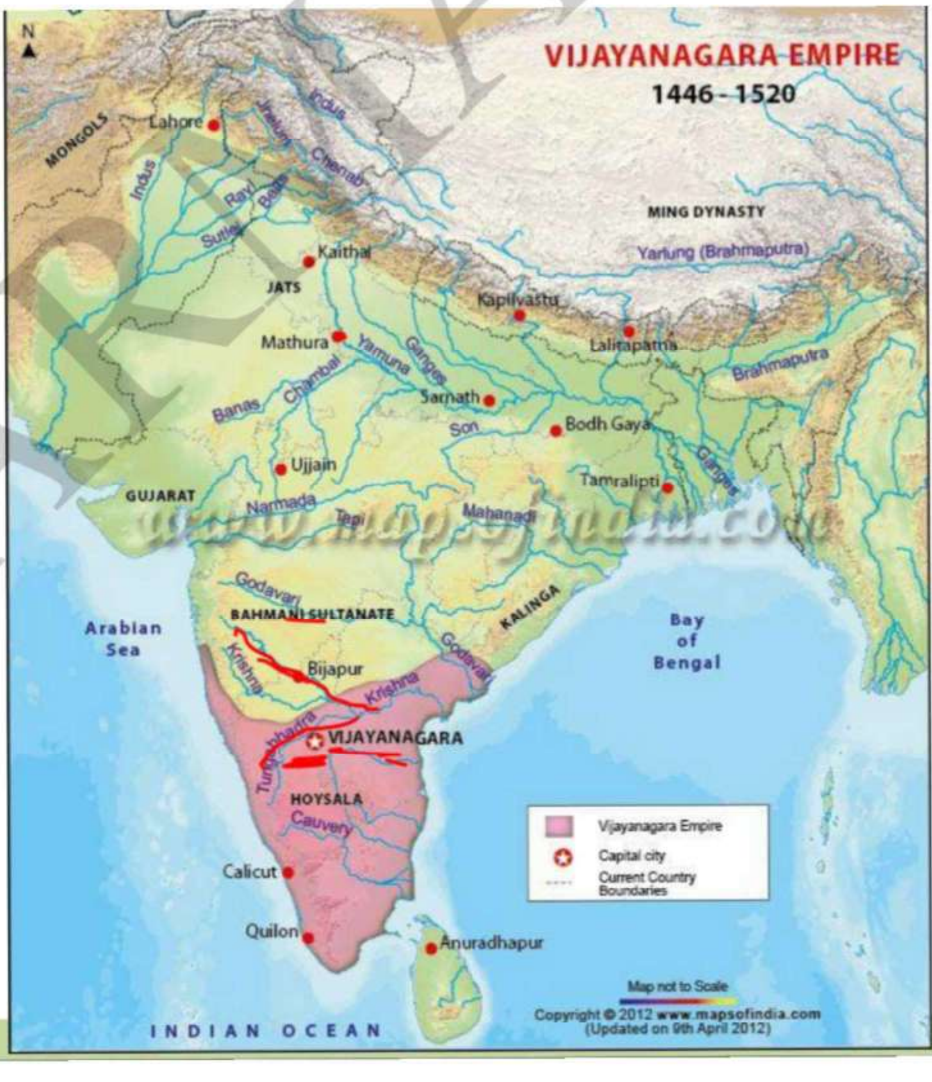

PARMAR SSC

- विचारक इस साम्राज्य का वर्णन करते हैं - कर्नाटक साम्राज्यम्
- व्यापारियों के स्थानीय समुदाय को कुदिराई चेट्टी के नाम से जाना जाता था।
- अपनी उत्तरी सीमा पर उन्होंने समकालीन शासकों के साथ प्रतिस्पर्धा की, जिनमें शामिल थे → दक्कन के सुल्तान और उड़ीसा के गजपति शासक

तुलाया जाता → अश्वपति

विजयनगर → नरपति

राजवंश		समय		संस्थापक
संगम	→	1336 - 1485 AD	→	हरिहर & बुक्का
सुलुव	→	1485 - 1505 AD	→	सलुवा नरसिम्हा
तुलुव	→	1505 - 1570 AD	→	वीर नरसिम्हा / नरसा नायक
अराविदु	→	1570 - 1650 AD	→	तिरुमाला

संगम वंश : 1336 - 1485 ई०

हरिहर I & बुक्का I (1336 - 56)

- संस्थापक - हरिहर & बुक्का (संगम के पुत्र) → काकतीयों के सामंत एवं बाद में कम्पिली धर के दरबार में मंत्री बने।
  - ↳ कर्नाटक विद्या विलास

बुक्का : विद्यानगर → विजयनगर

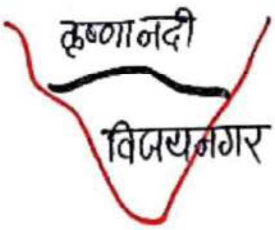

यात्री दौरा → इब्नबतूता (मोरक्को) → मोहम्मद बिन तुगलक के समकालीन (1325 - 1351)

PARMAR SSC

देवराय I (1406-22):

इनके शासनकाल में निकोलो डी कोंटी ने विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया/

↳ इटली

टैंक/ बांध/ नहरें बनवायी

देवराय द्वितीय (1423-46):

→ इनके शासनकाल में अब्दुर रज्जाक ने विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया/

↳ फारस से

सुलुव वंश [1486-1505 ई०]:

→ सुलुव नरसिम्हा (1486-91) सुलुव वंश का संस्थापक

- तिरुमल (1491)
- इम्मादी नरसिम्हा (1491-1505)

तुलुव वंश [1505-1570AD]:

→ संस्थापक - वीर नरसिम्हा (1505-09AD)

कृष्णदेव राय (1509-1529AD):

→ वीर नरसिम्हा के मुख्यमंत्री सलुवा तिम्मा ने इन्हे सिंहासन पर बैठाया/

→ निर्माण -
- विजय महल महल (विजय का घर)
- हजारा राम मंदिर
- भगवान विष्णु को समर्पित विट्ठल स्वामी मंदिर

PARMAR SSC

हजारा राम मंदिर

विट्ठल स्वामी मंदिर

उपाधि :
- यवनराज स्थापनाचार्य (यवन साम्राज्य अर्थात बीदर साम्राज्य को पुनर्स्थापित करने वाला)
- अभिनव भोज
- आंध्र भोज
- आंध्र पितामह

यूनानियों को भी बुलाया गया।

- अपने प्रारंभिक दिनों में ओडिशा के शासकों को हराया।
- इस्माइल आदिल खान को हराया और रायचूर दोआब को बहाल किया।
  - → कृष्णा & तुंगभद्रा के बीच

अमर नायक - सैनिक कमांडर / Military Commanders

- → अपनी माँ के नाम पर नागलपुरम की स्थापना की।
- → वह तेलुगु और संस्कृत दोनों भाषाओं के प्रतिभाशाली विद्वान थे।
- → उनकी कृतियाँ :
  - अमुक्तमाल्यदा (राजनीति पर तेलुगु कृति) → राज्यशिल्प
  - जम्बावती कल्यानम् (संस्कृत नाटक)

यात्री : डुआर्टे बारबोसा और डोमिंगो पेस (पुर्तगाली यात्री)

उनका दरबार 'अष्टदिग्गजों' से सुशोभित था।

अष्टदिग्गज : अल्लासानी पेद्दाना, नंदी थिमना, मदायागरी मल्लाना, धूरजति, अय्यल राजु रामा भद्रुडु, पिंगली सूराना, रामराजाभूषण, तेनाली राम कृष्ण।

PARMAR SSC

- उन्होंने अल्बुकर्क को भटकल में एक किला बनाने की अनुमति दी।
  ↳ पुर्तगाली

- कृष्णदेवराय के बाद उसका भाई अच्युत देव राय शासन में आया।
  ↳ फर्नाओ नुनीज

अरविदु राजवंश (1570-1650 AD):

1565 : तालीकोटा का युद्ध (अरविदु राजवंश की स्थापना से पहले)
या
राक्षसी तंगड़ी

B A G
B → बीजापुर
A → अहमदनगर
G → गोलकोण्डा

→ आलिया रामा राय (मुख्यमंत्री)

सदाशिव राय (तुलुव के कठपुतली शासक)
↓
आलिया रामा राय (मुख्यमंत्री)
↳ दक्कन के आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप
↳ SSC परीक्षा के अनुसार अरविदु वंश का अंतिम शासक

अंतिम शासक - श्री रंगा III (1678 ई०)

बाद में विजयनगर, पेनुकोण्डा और उसके बाद चंन्द्रगिरी में स्थानांतरित हो गया।

प्रशासन :

- अमरनायक → राया : शासक
  ↓ अंतर्गत
  नायक : सैन्य प्रमुख

आयंगर प्रणाली :

→ ग्राम समिति = 12 सदस्यीय

यात्रियों का दौरा :

- इब्नबतूता → हरिहर & बुक्का
- डुआर्टे बारबोसा } → कृष्ण देवराय
- डोमिंगो पीस }
- निकोलो डी कोंटी → देवराय I
- अब्दुर रज्जाक → देवराय II
- फर्नाओ नुनीज → अच्युतराय

PARMAR SSC

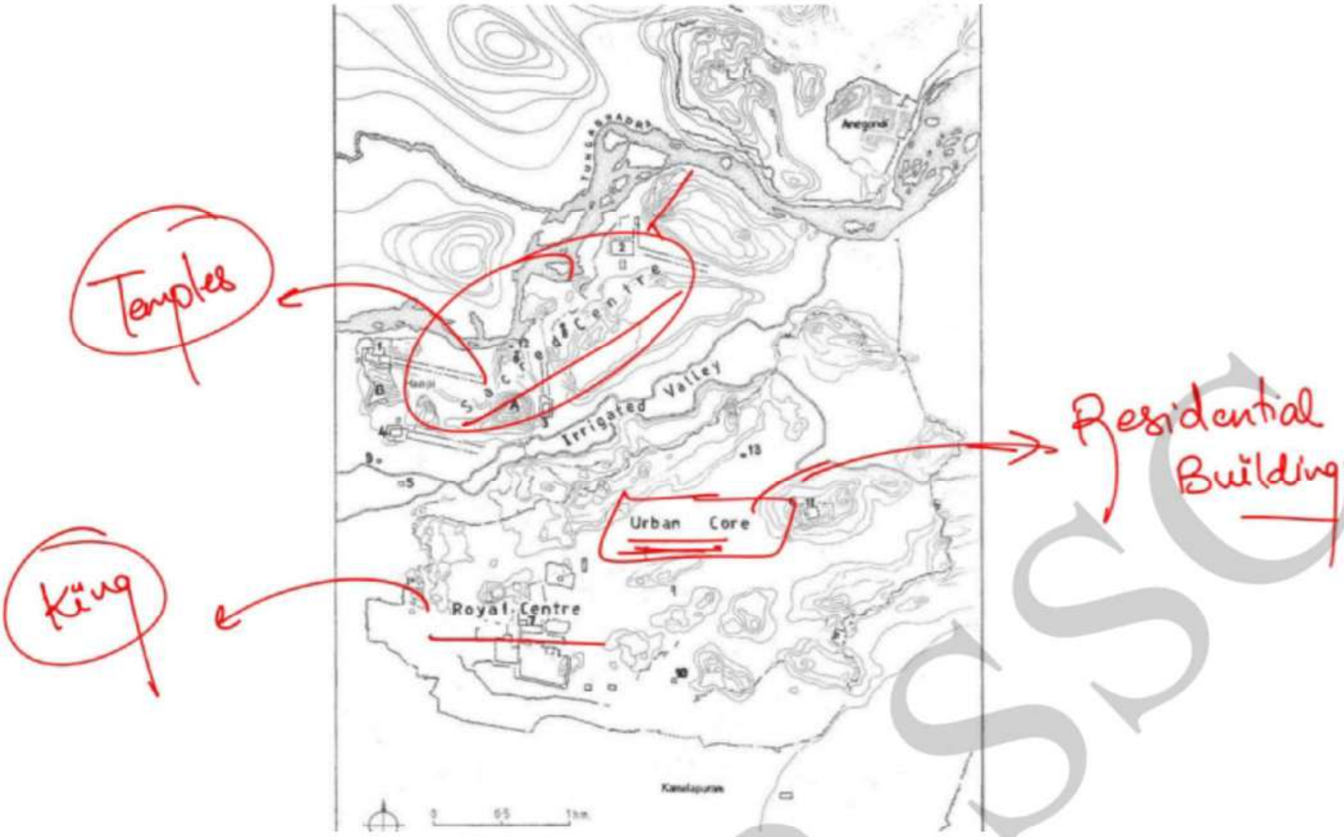

- कमालपुरम टैंक
  - कृष्णदेवराय द्वारा निर्मित
  - सीढ़ीदार टैंक
- अनंतराज सागर झील → संगम वंश के शासकों द्वारा निर्माण
- हीरिया नहर

शाही केन्द्र : { 60 मंदिर, 30 महल }

वास्तुकला :

कमल मंदिर (Lotus temple)

हाथी अस्तबल (Elephant stable)
- 11 हाथी बनवायें
- सम्भवतः कृष्णदेव राय द्वारा

- महानवमी डिब्बा → 11000 sq.ft
  ऊंचाई - 40 fit

कमलापुरम टैंक → कृष्ण देव राय द्वारा

PARMAR SSC

पवित्र केन्द्र : तुंगभद्रा के उत्तर में
↳ वाली & सुग्रीव की सेना रहती थी

- **विरुपाक्ष मंदिर** → हम्पी
  - ↳ लक्कन दंडेशा द्वारा निर्मित (देवराय II के समय)
  - गोपुरम का निर्माण - कृष्ण देव राय द्वारा
  - शिव के अवतार

दुर्ग → अब्दुर रज्जाक
↓
7 स्तर की किलाबंदी

1,2,3,4 → कृषि भूमि, खाद्यान्न
5,6 → शाही केन्द्र
7 → पवित्र केन्द्र

द्रोविड़ा शैली → विजयनगर साम्राज्य की वास्तुकला शैली
(इंडो-इस्लामिक)

बहमनी साम्राज्य

अलाउद्दीन हसन बहमान शाह (1347-56):

- → संस्थापक
- → राजधानी- गुलबर्गा (पहली राजधानी)
- → हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता है।
- → पराजित- वारंगल के काकतीय

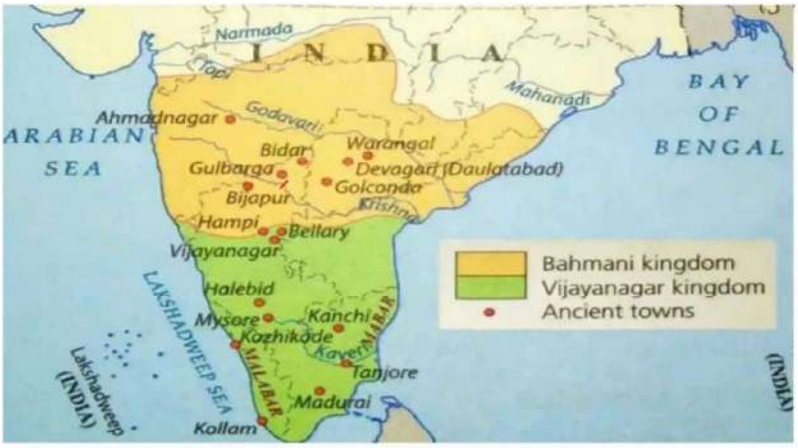

ताजुद्दीन फिरोजाबाद शाह (1397-1422):

→ इन्होंने देवराय प्रथम को हराया और उसके बाद के युद्ध में हार गये। और उसकी पुत्री से शादी की।

अहमद शाह वली (1422-35 AD):

→ राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित की।

PARMAR SSC

महमूद गवां :

- बहमनी साम्राज्य के दौरान पेशवा
- उपाधि - मलिक - उत - तुज्जार (हुमायुं शाह द्वारा)
  - ↓ ख्वाजा-ए- जहां
  - ↳ व्यापारियों का प्रमुख
- गवां ने कांची तक विजयनगर के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की/ पश्चिमी तट पर गोवा और दाबोल पर विजय प्राप्त की/
- बहमनी शाह, शासक जो क्रूरता के लिए विख्यात था और इसलिए उसे 'जालिम' की उपाधि मिली : हुमायूं शाह

आमिर / Amirs ⟶ बहमनी शासको को सैनिक सहायता प्रदान करते थे/

(2)

- अफाकी (परदेशी) इरान, इराक से आये सुन्नी मुसलमान
- दक्कनी

→ पूरा बहमनी साम्राज्य 4 प्रशासनिक यूनिटों में विभाजित था → तरफ (प्रांत)

- गुलबर्गा, बीदर, बरार, दौलताबाद (तरफदार → गवर्नर)

500 घोड़े → 1000000 हूण / Huns

खालीसा भूमि: सुल्तान के प्रत्यक्ष नियंत्रण की भूमि और उससे एकत्र किए गए कर राजस्व को शाही दरबार और शाही घराने के रखरखाव के लिए खर्च करना/

PARMAR SSC

बहमनी साम्राज्य का 5 राज्यों में विभाजन

राज्य	वर्ष	संस्थापक	राजवंश	
बरार	1484	फतउल्लाह इमादशाह	इमादशाही वंश	1574 अहमदनगर
बीजापुर	1489	युसुफ आदिलशाह	आदिलशाही	1686 औरंगजेब
अहमदनगर	1490	मलिक अहमद	निजामशाही	1633 शाहजहां
गोलकुंडा	1518	कुली कुतुब शाह	कुतुबशाही	1687 औरंगजेब
बीदर	1526-27	अमीर अली बरीद	बरीदशाही	1610 बीजापुर

इब्राहिम आदिल शाह

- फारसी के स्थान पर दक्खिनी को दरबारी भाषा के रूप में लागू किया गया।
- गोल गुम्बद का निर्माण → मुहम्मद आदिल शाह
  - 'व्हिसपरिंग गैलरी' के लिये प्रसिद्ध
  - प्रसिद्ध वास्तुकार - दाबुल के याकूत
- प्रसिद्ध गोलकोंडा किला सबसे पहले काकतीय राजवंश द्वारा बनाया गया था और बाद में कुतुबशाही शासकों द्वारा मजबूत किया गया।

गोलकोण्डा → हीरों की खान के लिए प्रसिद्ध

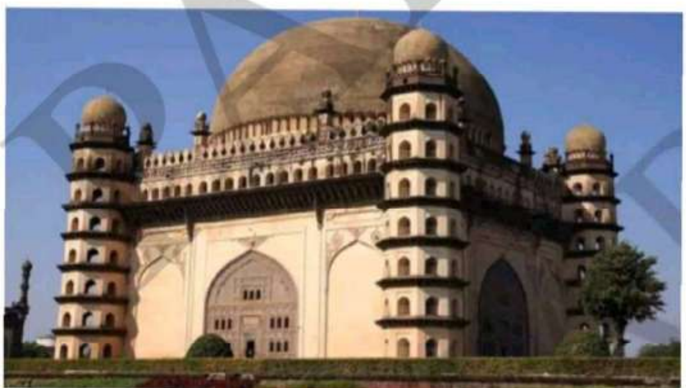

Gol Gumbaj

· Second largest in the world

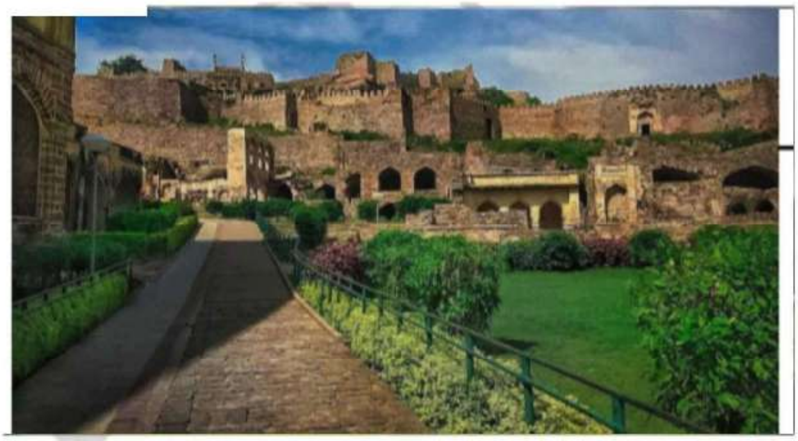

Golkonda Fort

गोल गुम्बद → विश्व का 2nd सबसे बड़ा गुम्बद, भारत का पहला

PARMAR SSC

मुहम्मद कुली कुतुब शाह :

- कुतुबशाही राजवंश के महानतम शासक
- हैदराबाद शहर के संस्थापक (मूल रूप से इसे भागयनगर के नाम से जाना जाता था, जो सुल्तान की प्रिय भागमती के नाम पर था)
- उन्होंने प्रसिद्ध चारमीनार का निर्माण कराया /

अन्य:

- कृष्ण तृतीय (मान्यखेत) का संबंध था - राष्ट्रकूट से
- 'हिरण्य गर्भ' अनुष्ठान किसके द्वारा किया जाता था - दंतिदुर्ग
- बहमनी शासक → क्रूरता के लिये विख्यात → जालिम (उपाधि) → हुमायूँ शाह

PARMAR SSC

मुगल साम्राज्य

बाबर (1526-1530) :

→ पानीपत का प्रथम युद्ध : 21 अप्रैल 1526

↳ बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया।

↳ प्रथम बार गन पाउडर का प्रयोग किया गया

↓ वास्तविक नाम - जहीर - उद्दीन - मुहम्मद

- अनुमानित मुगल राजवंश भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना तक चला।
- पादशाह की उपाधि धारण की।
- पिता → तैमूर का वंशज
- माता → चंगेज खान का वंशज

PARMAR SSC

- जब वह 12 वर्ष का था तो वह 1494 में फरगना का शासक बन गया।
- एक अन्य मंगोल समूह, उज्बेगों के आक्रमण के बाद उसे अपना सिंहासन छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- उसने 1504 में काबुल पर विजय प्राप्त की।

→ दौलत खां लोदी ने बाबर को आमंत्रण दिया था।

→ खुद को वे उज्बेक बताते हैं।

→ तुलुगमा पद्धति अपनायी बाबर ने।

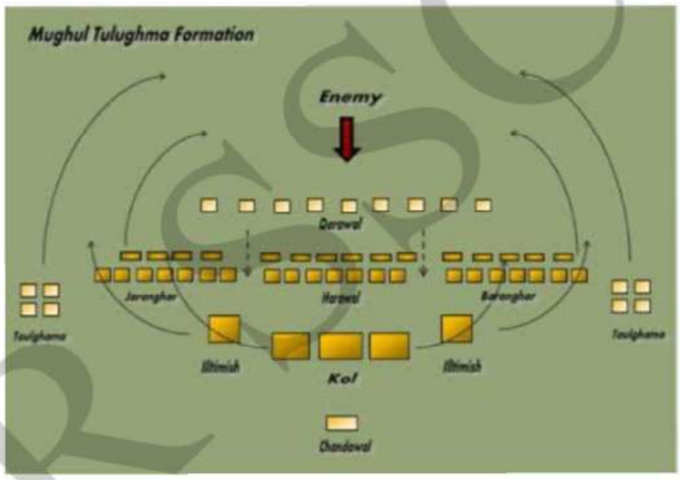

बाबर के युद्ध :

खानवा का युद्ध →	1527 →	राणा सांगा (मेवाड़) को हराया।
चंदेरी का युद्ध →	1528 →	मेदिनी राय को हराया।
घाघरा का युद्ध →	1529 →	अफगानों को हराया। → महमूद लोदी

→ 1530 में आगरा में बाबर की मृत्यु हो गयी।
  ↳ कब्र - काबुल में

आत्मकथा: तुजुक-ए-बाबरी - तुर्की भाषा में → चारबाग शैली का जिक्र

- फारसी में अनुवाद - बाबरनामा - अब्दुर रहीम खानेखाना
- अंग्रेजी में - मैडम बेवरिज
- उन्होंने भारत और उसके साम्राज्य का उत्कृष्ट विवरण दिया है।

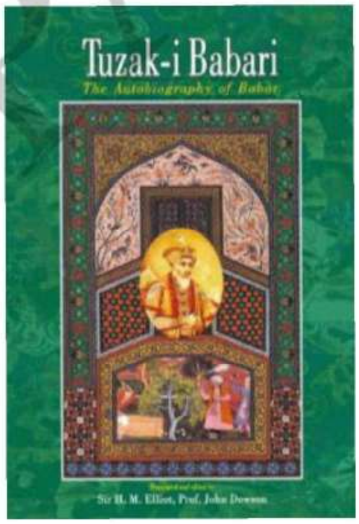

PARMAR SSC

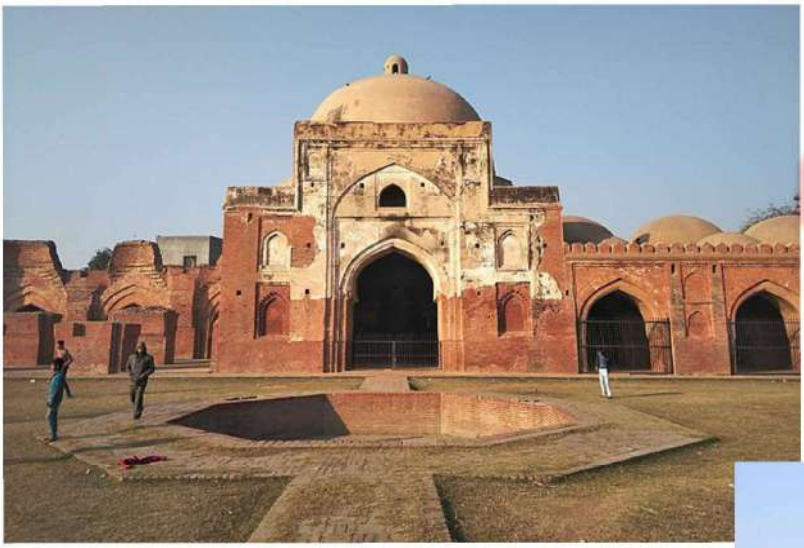

पानीपत की काबुली बाग मस्जिद

आराम बाग आगरा →

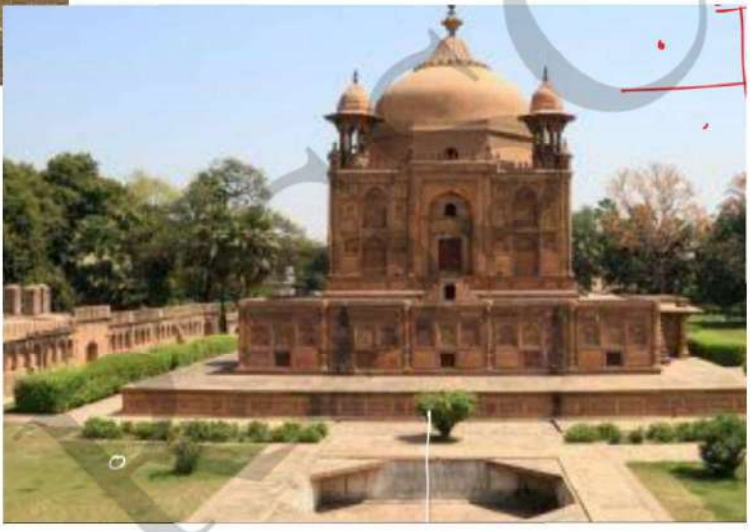

हुमायूँ (1530-40 & 1555-56)

- बाबर का पुत्र था। 1530 में सिंहासन पर बैठा।
- उसके उत्तराधिकार को उसके भाइयों कामरान, हिंडाल और अश्करी के साथ-साथ अफगानों ने चुनौती दी थी।

- चौसा का युद्ध (1539)
- कन्नौज / बिलग्राम का युद्ध (1540)

→ हुमायूँ पूरी तरह से शेरशाह सूरी से पराजित हुआ।

→ हुमायुं ने शरण ली - असाफिद राजवंश (ईरान)

→ हुमायुंनामा → उसकी बहन गुलबदन बेगम ने जीवनी लिखी।

→ दिल्ली में 'दीन-ए-पनाह' बनवाया → द्वितीय राजधानी

PARMAR SSC

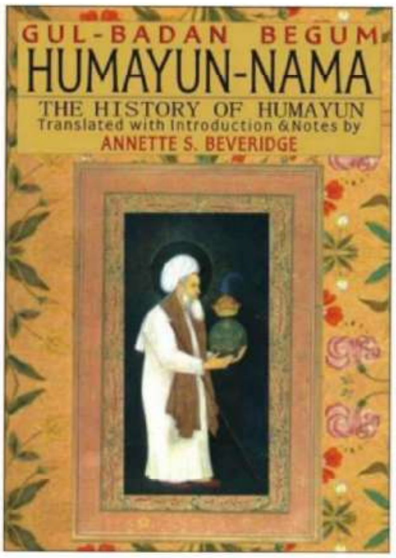

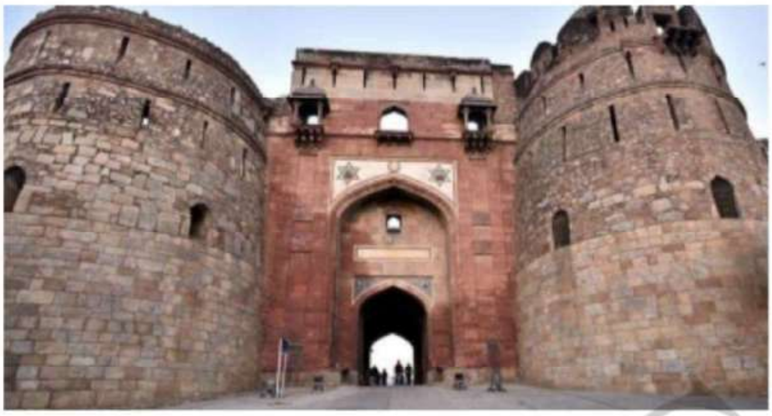

'दीन-ए-पनाह'

- शेरशाह की मृत्यु के बाद हुमायूँ ने 1555 में भारत पर आक्रमण किया और उसके भाइयों व अफगानों को हराया एवं वह एक बार फिर से भारत का शासक बन गया।
- 1556 में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतरते समय उसकी मृत्यु हो गयी। दिल्ली मे दफना दिया गया।

हुमायूं का मकबरा : बीगा बेगम / हाजी बेगम द्वारा निर्माण

↳ चार बाग शैली

PARMAR SSC

शेरशाह [1540-1545 AD]:

- सासाराम के जमींदार हसन खान का पुत्र था। वास्तविक नाम - फरीद खान
- इब्राहिम लोदी ने अपने पिता की जागीर उसे हस्तांतरित कर दी।
- 1539 में उसने चौसा के युद्ध में हुमायूँ को हराया और शेरशाह की उपाधि धारण करके सम्राट बना।
- 1540 में उसने कन्नौज की लड़ाई में हुमायुं को हराकर कन्नौज पर कब्जा कर लिया।
- सम्राट के रूप मे उसकी विजय-
  - मालवा (1542)
  - रणथंभौर (1542)
  - रायसीन (1543)
  - मारवाड़ पर राजपूताना कब्जा (1542)
  - चित्तौड़ (1544)
  - कालिंजर (1545)
- 1545 में कालिंजर पर विजय प्राप्त करते समय उसकी मृत्यु हो गयी।
- रुपया नामक सिक्का जारी किया।
- पूरे साम्राज्य में मानक वजन और माप तय किये।
- ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण करवाया।
  - पेशावर से कलकत्ता (चिटगाव (बांग्लादेश)) तक

→ सरई का निर्माण करवाया।

→ जो रोड से यात्रा करते समय आराम करने या सामान रखने के लिये पूरी तरह सुरक्षित घर

दफन - सासाराम

→ भूमि की माप की जाती थी।

→ औसत का 1/3 भाग कर

→ किसान को एक पट्टा और एक काबूलियत दिया गया जिससे किसान के अधिकार और कर तय हो गये।

→ जमींदारी हटा दी गई और कर सीधे वसूल किये गये।

→ दिल्ली में पुराना किला बनवाया।

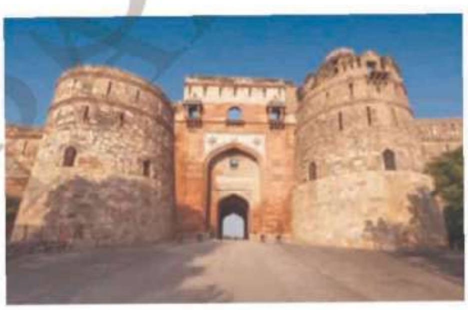

Purana Quila at Delhi

अकबर [1556-1605 AD]:

→ मुगल साम्राज्य के महानतम शासकों में से एक था।

→ हुमायुँ का सबसे बड़ा पुत्र था।

→ उपाधि- जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादशाह गाजी की उपाधि के तहत सिंहासन पर बैठा।

→ संरक्षक- बैरम खान को नियुक्त किया गया।

पानीपत का दूसरा युद्ध: 5 नवंबर 1556

हेमू (मुहम्मद आदिल शाह) और बैरम खान के बीच लड़ा गया।

हेमू → मारा गया

बैरम खान → विजयी

→ अकबर ने जहां भी संभव हो राजपूतों पर जीत हासिल करने की कोशिश की।

→ राजपूत राजाओं को मुगल सेवा में शामिल किया उनके साथ मुगल कुलीनों के बराबर व्यवहार किया।

→ अकबर 13 वर्ष की आयु में कालानौर, पंजाब में गद्दी पर बैठा।

→ 1562 में भारमल / बिहारीमल (आमेर, राजधानी जयपुर के कछवाह राजपूत शासक) की बेटी हरखा बाई से शादी करके अकबर ने हिंदुओं के साथ अपनी धर्मनिरपेक्ष नीति प्रदर्शित की।

→ राणा प्रताप सिंह और और उनके पुत्र अमर सिंह को छोड़कर (मेवाड़ के सिसोदिया राजपूत, राजधानी - चित्तौड़) अधिकांश राजपूत राजाओं ने अकबर की सर्वोच्चता की मान्यता दी।

→ हल्दीघाटी का युद्ध (1576)
- राणा प्रताप → हार गये।
- मुगल → आमेर के राजा मान सिंह द्वारा नेतृत्व

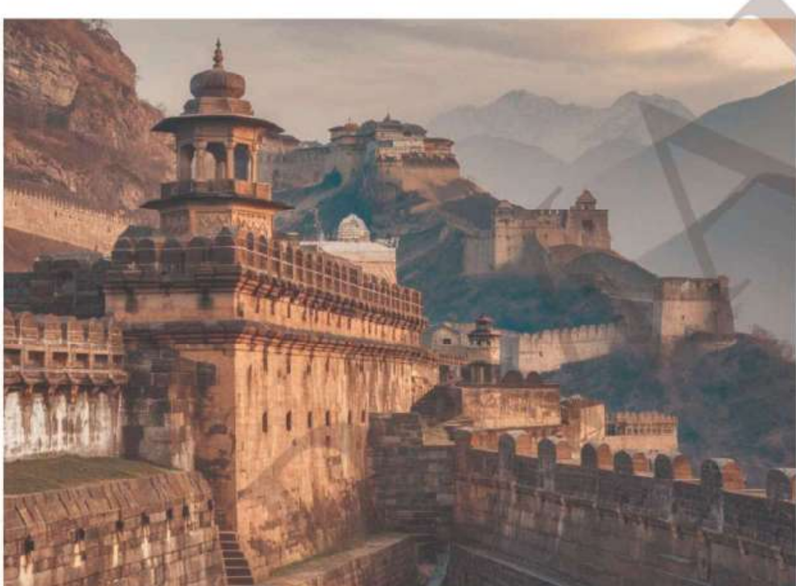

कांगड़ा किला (हिमाचल)
भारत का सबसे पुराना किला

→ कुम्भलगढ़ किला → सिसोदिया शासकों द्वारा निर्माण
↳ दीवार = 36 Km लम्बी (चीन की दीवार के बाद सबसे लम्बी)

→ अकबर ने 1581 में नया धर्म 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की।
↳ एक मात्र हिन्दु द्वारा अपना गया - बीरबल

PARMAR SSC

हिंदू धर्म, इस्लाम, जैन और ईसाई धर्म जैसे कई धर्मों के मूल्यों के संश्लेषण पर आधारित

- 1569 - जहांगीर का जन्म
- 1570 - फतेहपुर सीकरी का निर्माण
- 1571 - फतेहपुर सीकरी में राजधानी स्थानांतरित
- 1585 - राजधानी लाहौर स्थानांतरित
- 1598 - राजधानी लाहौर से आगरा स्थानांतरित
- 1575 - बुलंद दरवाजा का निर्माण

निर्माण :

- फतेहपुर सीकरी
- बुलंद दरवाजा

→ सलीम चिश्ती के सम्मान में
गुजरात विजय के बाद
अपना दरबार आगरा से यहीं स्थानांतरित किया।

- आगरा का किला
- लाहौर का किला
- इलाहाबाद का किला
- हुमायुँ का मकबरा (दिल्ली) → यूनेस्को विश्व विरासत स्थल

नवरत्न :

1. बीरबल → प्रशासक
2. अबुल फजल → विद्वान और राजनेता
3. फैजी → विद्वान और राजनेता, अबुल फजल के भाई)
4. टोडरमल → वित्तमंत्री, दहशाला, बंदोबस्त / जब्ती
5. भगवानदास → मनसबदार, राजा भारमल के पुत्र
6. मानसिंह → मनसबदार, राजा भारमल के पौत्र
7. तानसेन → संगीतज्ञ

PARMAR SS

8. अब्दुर रहीम खानेखाना → मंत्री, हिंदी कवि

9. मुल्ला दो प्याजा

फैजी → इबादतखाना शुरू करने में अकबर की सहायता की।
↳ धार्मिक प्रवचन

तानसेन —
- वास्तविक रूप से राजा रामचंद्र के संरक्षण में थे।
  तोमर राजा, ग्वालियर
- ध्रुपद के संस्थापक • रुद्रवीणा / रबाब
- घराना - रीवा / ग्वालियर घराना
- वास्तविक नाम - रामतनु पांडे
- अकबर ने 'मियां' की उपाधि दी।

• गुरु → स्वामी हरिदास

अबुल फजल → 'अकबरनामा' लिखी।

3 भाग
- पहला ↓ अकबर के पूर्वजों के बारे में
- दूसरा ↓ अकबर के राज्य के बारे में
- तीसरा ↓ आइन-ए-अकबरी
  अकबर का प्रशासन

{ तस्सुज (बराबर भागों में विभाजित लंबाई)
{ गज - मापक इकाई

अकबर के शासन के दौरान भू-राजस्व :

भूमि प्रकार :

- पोलज → हर साल अलग फसल बोई जाती थी, कभी खाली नहीं छोड़ा जाता था।
- परौती → अपनी उर्वरा शक्ति वापस पाने के कुछ लिये कुछ समय के लिये खाली छोड़ना
- चाचर → इस जमीन पर तीन या चार साल तक खेती नहीं की जाती थी।
- बंजर → इस जमीन पर 5 साल या उससे ज्यादा समय तक खेती नहीं की जाती थी।

[राजस्व निश्चित → 10 वर्षों में दहसाला के नाम से जाना जाने वाला अनुमान
[कर → इसका 1/3 भाग

PARMAR SSC

- जजिया कर को समाप्त कर दिया
- अकबर की 1605 में मृत्यु हो गई।
  - ↳ मकबरा - सिकंदरा (आगरा)

शासन व्यवस्था:

- मनसबदारी की शुरुआत → मनसब (Rank)
  - → जागीरदारी व्यवस्था
  - ↓ सिपाही (जट - zat) के आधार पर निधि निर्धारित
  - → अधिकतम रैंक - 7000
    - मिर्जा अजीज कोका
    - मानसिंह

वेतन का भुगतान
- Cash - नगदी
- जागीर
  - ↳ भूमि के लिये राजस्व अधिकार

- 1601 में, अकबर ने खंडेश के असीरगढ़ किले की ओर अभियान किया और जीत लिया, जबकि उसके बेटे जहांगीर ने दिल्ली में विद्रोह कर दिया।

अनुवाद विभाग:

- रामायण → (फारसी में अनुवाद) अब्दुल कादिर बदायुनी
- महाभारत → अब्द-उल-कादिर बदायुनी + फैजी
  - ↳ रज्मनामा

- चारबाग वास्तुकला शैली की शुरुआत → मुगलों द्वारा
- अकबर के साम्राज्य में सैन्य कमांडर → फौजदार
- कोतवाल - पुलिस
- दीवान - राजस्व
- बख्शीस - सैन्य कमांडरों की सहायता

PARMAR SSC

मुगल साम्राज्य

जहाँगीर [1605-1627 AD]:

- वास्तविक नाम - नूर-उद-दिन मोहम्मद सलीम
- यह अपने सख्त न्याय प्रशासन के लिये जाने जाते है।
- शाही न्याय चाहने वालों के लिये आगरा किले में 'जंजीर-ए-अदल (न्याय की जंजीर) की स्थापना की।
- 1611 में, जहाँगीर ने बंगाल के फारसी रईस शेर अफगान की विधवा 'मिहर-उन-निसा' से शादी की।
  - → नूरजहाँ की उपाधि दी।
- नूरजहां ने राज्य के मामलों में जबरदस्त प्रभाव डाला।
- नूरजहां को आधिकारिक पादशाह बेगम बनाया गया।

वास्तविक नाम - मिर्जा नूर-उद-दीन बेग मुहम्मद खान सलीम

पिएत्रा ड्यूरा सजावट से सुसज्जित एतमादुद्दौला का मकबरा आगरा में स्थित है। → नूरजहां द्वारा अपने पिता की याद में निर्मित

PARMAR SSC

सराय नूरमहल भारत का केन्द्र संरक्षित स्मारक है, यह पंजाब में स्थित है।

↳ नूर जहां

- जहांगीर ने मारवाड़ की मानमती / जगतगोसाई / जोधाबाई और एक कछवाहा राजकुमारी से भी शादी की। (राठौर राजकुमारी)

  ↳ पुत्र - शाहजहां

मेवाड़ के अमरसिंह ने मुगलों (जहांगीर) की अधीनता स्वीकार कर ली।

- 1608 में, ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधि कैप्टन विलियम हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में आया।
  ↓ 400 का मनसब बनाया
- 1615 में, इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो भी उसके दरबार में आया।
- हांलाकि जहांगीर ने शुरुआत में विरोध किया लेकिन बाद में उसने अंग्रेजों को सूरत में एक व्यापारिक बन्दरगाह स्थापित करने की अनुमति दे दी।
- उसने अहमदनगर पर कब्जा कर लिया।

  ↳ मलिक अम्बर ने उसे बालघाट की जागीर सौंप दी।
- सिख गुरु अर्जुन देव (5 वें गुरु) की हत्या करवायी।

  ↳ खुसरो (जहांगीर का पुत्र) ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और अर्जुन देव ने उसे शरण दी।
- राजकुमार खुर्रम और महावत खान ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

  शाहजहां + मलिक अम्बर
- संस्मरण लिखा - तुजुक-ए-जहांगीरी → फारसी भाषा में।
- जहांगीर को लाहौर में दफनाया गया।

PARMAR SSC

शाहजहाँ : [1628-58]

- माता - जगतगोसाई / जोधाबाई (राजा जगत सिंह की पुत्री)
- वह अपनी दक्कन और विदेशी राजनीति के लिए जाने जाते है।
- पत्नी - मुमताज महल → 1631 मे मृत्यु → शाहजहाँ के सिंहासन पर बैठने के 3 वर्ष बाद
  - ↳ वास्तविक नाम - अर्जुमंद बानो
  - शाहजहाँ ने इनकी याद में ताजमहल बनवाया। (1632-53)

ताजमहल का वास्तुकार - अहमद लाहौरी

- 1632 - पुर्तगालियों को हराया।
- 1637 - उसने अहमदनगर, बीजापुर और गोलकोंडा पर कब्जा कर लिया और सबने उसकी अधीनता स्वीकार की।

- उसके शासनकाल वर्णन → फ्रांस का यात्री
  - ↓ बरनायर, तरवनायर और निकोलाओ मानुची
    - बरनायर → पुस्तक → Travels in the Mugal Empire
    - तरवनायर → Travel in India
    - निकोलाओ मानुची → इटालियन यात्री

- पीटर मुंडी → शाहजहाँ के शासनकाल में पड़ने वाले अकाल का वर्णन किया।
- कहा जाता है कि इसका शासनकाल मुगल वंश के शिखर पर था।
- यह कला, संस्कृति और वास्तुकला को बढ़ावा देने के लिये जाना जाता है।

उन्होंने नई प्रशासनिक इकाई, चकला की शुरुआत की।

PARMAR SSC

निर्माण: लाल किला, जामा मस्जिद, ताजमहल

(लाल किला, जामा मस्जिद → दिल्ली)

- **दीवान-ए-आम** → जहाँ आम लोग इकट्ठा होते है।
- **दीवान-ए-खास** → सभी महत्वपूर्ण लोग : राजा और कुलीन लोग यहाँ बैठते थे।

↓ दिल्ली

पित्रा ड्यूरा नामक सजावट की कला शाहजहाँ के शासनकाल में लोकप्रिय हुई-

मुसम्मन बुर्ज : इसे जैस्मिन पैलेस के नाम से भी जाना जाता है, जहां उन्होंने अपने अंतिम वर्ष कैद में बिताए थे

निर्मित - शाहजहाँ

शीश महल : शाहजहां द्वारा निर्मित
↳ आगरा

कोहिनूर हीरा → **मयूर सिंहासन** → **दीवान-ए-खास**

कोहिनूर हीरा: सर्वप्रथम काकतीय वंश द्वारा उत्खनन किया गया। (दक्षिण भारत)

↓ नादिरशाह द्वारा चुराया गया

मयूर सिंहासन: ऊँचे भाग में बनाया गया
1100 Kg सोना (लगभग)

शाहनामा
↳ फिरदौसी
(11 वी शताब्दी)

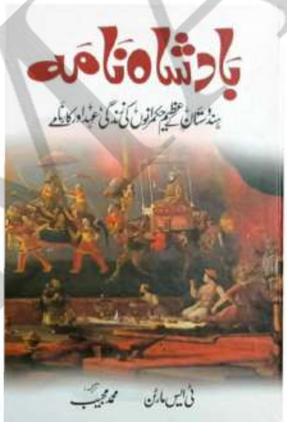

बादशाहनामा / पादशाहनामा
↳ अब्दुल हामिद लाहौरी

- शाहजहां के खराब स्वास्थ्य के कारण 1657 में उसके चारों बेटों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया।
- जुलाई 1658, औरंगजेब विजेता बनकर उभरा
- शाहजहाँ दाराशिकोह को गद्दी पर बैठाना चाहते थे। उन्होंने औपचारिक रूप से दारा शिकोह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और उन्हे शाहजादा-ए-बुलंद इकबाल (उच्च भाग्य का राजकुमार) की उपाधि प्रदान की।

PARMAR SSC

→ औरंगजेब ने पिता को कैद करके आगरा के किले मे रखा और 1666 में उसकी मृत्यु हो गई, शाहजहां के शव को ताजमहल में मुमताज महल के बगल में दफनाया गया।

औरंगजेब [1658-1707]:

→ 1658, दारा शिकोह को धरमत (सामुगढ) और देवराय के युद्ध में हराया

→ जीतने के बाद, दिल्ली में उसका राज्याभिषेक हुआ

→ उपाधि- आलमगीर

→ उसने सिखों के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर को बंदी कर उनकी हत्या करवा दी।

↳ क्योंकि उन्होंने इस्लाम अपनाने से इंकार कर दिया।

गुरु गोविंद सिंह (सिखों के 10 वें और अंतिम गुरु तथा गुरु तेगबहादुर के पुत्र) ने मुस्लिम अत्याचार से लड़ने और अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए अपने अनुयायियों को एक समुदाय 'खालसा' में संगठित किया।

1708- दक्कन के नांदेर मे एक अफगान द्वारा हत्या कर दी गई।

शिष्य- बंदा बहादुर ने मुगलों के खिलाफ युद्ध जारी रखा।

↳ मूलनाम- लक्ष्मण देव

↳ संत बने और माधो दास (पहले) नाम रखा।

↳ गुरु गोविंद सिंह द्वारा 'बंदा बहादुर' नाम दिया गया।

→ शासन के पहले 23 वर्षों (1658-81) के दौरान औरंगजेब ने उत्तर भारत पर ध्यान केंद्रित किया।

शिवाजी (सबसे शक्तिशाली मराठा राजा) → औरंगजेब के दुश्मन

↓

औरंगजेब ने आमेर के जयसिंह के साथ मिलकर षडयंत्र रचा। (मारने के लिये)

शिवाजी ने आमेर औरंगजेब के दरबार का दौरा किया और उन्हें कैद कर लिया गया लेकिन 1674 में वे भागने में सफल रहे।

↳ खुद को छत्रपति घोषित किया। मृत्यु- 1680, उत्तराधिकारी- सम्भाजी

PARMAR SSC

- 1686 - बीजापुर पर औरंगजेब ने कब्जा कर लिया।
- 1687 - गोलकोंडा पर कब्जा कर लिया।
- नियुक्ति → मुहतसिब → धार्मिक अधिकारी
- लिखा - फतवा-ए- आलमगीर (मुस्लिम कानून / इस्लामिक धर्म)
- जजिया को पुनः शुरू किया।
  - ↳ हिंदू मनसबदारों ने अपना उच्च अनुपात बनाए रखा।
- मृत्यु- 1707 → देवगिरी → औरंगाबाद → शंभाजीनगर (वर्तमान)
- दफनाया गया - दौलताबाद
- उसे 'जिंदापीर' अर्थात जीवित संत कहा जाता था।

बाद के मुगल :

- **बहादुर शाह** (1707 - 1712)
  अन्य नाम- शाह आलम प्रथम
- **जहांदार शाह** : 1712 - 1713
  जुल्फिकार की मदद से गद्दी पर बैठा, जजिया कर समाप्त किया।
- **फर्रुखसियार** : (1713 - 1719)
  सय्यद भाइयों की मदद से गद्दी पर बैठा।
  ↓
  फिर मराठों की मदद से उसे मार डाला।

सैय्यद बंधु (किंग मेकर)
- हुसैन अली खान बरहा
- अब्दुल्ला खान बरहा

- **मुहम्मदशाह** : (1719 - 1748)
  नादिर शाह का आक्रमण (1739)
  'रंगीला बादशाह' के नाम से भी जाना जाता

- नादिरशाह ने 1739 में दिल्ली शहर को लूटा और अपार धन- संपत्ति लूट ली।
- इस आक्रमण के बाद अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने लूटपाट की एक श्रृंखला शुरू की, जिसने 1748 और 1761 के बीच उत्तर भारत पर पांच बार आक्रमण किया।

PARMAR SSC

→ अहमदशाह → 1748 - 1754

→ आलमगीर II → 1754 - 1759

→ शाहआलम II → 1759 - 1806

→ अकबर II → 1806 - 1837

→ बहादुरशाह II → 1837 - 1857

प्रशासन व्यवस्था :

सूबा → सूबेदार / निजाम
↓
सरकार → फौजदार → राजस्व संग्रहकर्ता → अमलगुजार
↓
परगना / ग्राम → तालुक → सिकदार → कानूनगो → राजस्व संग्रहकर्ता

मीर समन - शाही घराने का प्रभारी

मीर बख्शी - सामान्य खुफिया / सैन्य नियुक्तियाँ

दीवान - राजस्व प्रशासन

फौजदार - कानून और व्यवस्था बनाए रखना

अमलगुजार - भूमि राजस्व के आकलन और संग्रह के लिए जिम्मेदार

सदर - न्यायिक मामलों का प्रबंधन

शिकदार - परगना स्तर पर पुलिस प्रमुख

अमीन - राजस्व एकत्रित करना

" राजपूत "

PARMAR SSC

कई राजपूत राजाओं, विशेष रूप से आमेर और जोधपुर के राजाओं ने मुगलों के अधीन प्रतिष्ठा के साथ सेवा की थी, बदले में उन्हें अपनी वेतन जागीरों में काफी स्वायत्तता का आनंद लेने की अनुमति दी गई थी।

- इन प्रभावशाली राजपूत परिवारों ने गुजरात और मालवा के समृद्ध प्रांतों की सूबेदारी का दावा किया।
- जोधपुर के राजा अजीत सिंह गुजरात के गवर्नर थे और आमेर के सवाई राजा जय सिंह मालवा के गवर्नर थे।
- सवाई राजा जय सिंह ने जयपुर में अपनी नई राजधानी स्थापित की और 1722 में उन्हें आगरा की सूबेदारी दी गई।

(जय सिंह II)

मेहरानगढ़ किला → जोधपुर
(मारवाड़)
→ नीला शहर
→ रावजोधा

जंतर मंतर - 5 (दिल्ली, जयपुर, बनारस, उज्जैन, मथुरा)

(15° - 1 घण्टा)

मुगल संस्कृति :

- चारबाग वास्तुकला शैली
- हुमायुं का मकबरा → उसकी विधवा हाजीबेगम द्वारा निर्मित
- बुलन्द दरवाजा → अकबर द्वारा गुजरात विजय के बाद निर्मित
  → फतेहपुर सीकरी का मुख्य द्वार

• सलीम चिश्ती का मकबरा → अकबर द्वारा शुद्ध संगमरमर से बनी पहली मुगल इमारत
(जहांगीर द्वारा संगमरमर से पुनः निर्मित)

→ बीरबल का महल, तानसेन का महल भी फतेहपुर सीकरी मे स्थित है।

• मोतीमस्जिद (लाहौर) → जहाँगीर ने लाहौर में मोती मस्जिद और शाहदरा (लाहौर) में अपना मकबरा बनवाया ।

• मोतीमस्जिद (आगरा) → शाहजहाँ द्वारा निर्मित (संगमरमर से बनी एकमात्र मस्जिद)

• लाल किले में औरंगजेब द्वारा बनाई गई एकमात्र इमारत मोती मस्जिद है।

PARMAR SSC

- खास महल → दीवान-ए-खास (शाहजहाँ द्वारा निर्मित)
  → मयूर सिंहासन (लाल किला के अंदर)
- दीवान-ए-आम → अकबर द्वारा निर्मित
- मुस्समान बुर्ज - → शाहजहां द्वारा निर्मित
  → इसे जैस्मिन पैलेस के नाम से भी जाना जाता है जहां इन्होंने अपने अंतिम वर्ष कैद में बिताए थे।
- लाल किले में औरंगजेब द्वारा बनाई गई एकमात्र इमारत मोती मस्जिद है।
- बीबी का मकबरा → शम्भाजी नगर (यहां औरंगजेब ने अपने अंतिम वर्ष बिताये) औरंगजेब द्वारा अपनी पत्नि (रबिया-उल-दौरानी) की याद में बनाया गया एकमात्र स्मारक।
- रबिया-उल-दौरानी → दिलरास बानो बेगम (अन्य नाम)

PARMAR SSC

- 1586 मे अकबर ने कश्मीर को मुगल साम्राज्य मे मिला लिया।
- 1579 में महजरनामा जारी किया - अकबर ने
- मखसूदाबाद शहर → मुर्शिदाबाद → अकबर ने बनवाया
- जात & सवार → मनसबदारी प्रथा से संबंधित
- सराय नूर महल → पंजाब मे, नूरजहाँ ने बनवाया।
- इतिमाद-उद-दौला का मकबरा → पिएट्रा ड्यूरा शैली में → आगरा → नूरजहाँ ने बनवाय
- पुस्तक चार चमन → चन्द्रभान ब्राह्मण ने → शाहजहाँ के शासनकाल मे
- शाहजहाँ ने → सुल्तान बुलंद इकबाल की उपाधि → दाराशिकोह को दी
- बादशाही मस्जिद → औरंगजेब द्वारा, लाहौर में
- चार मीनार → मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने
- गोल गुम्बद → आदिलशाह ने